हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P. G, II sem

विषय - गद्य विधाओं में जीवनी-साहित्य

वर्तमान या अतीत समाज के किसी प्रधान पुरुष का उसके सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवेश में जन्म से मरण तक सम्पूर्ण जीवन जीवनी में रहता है। जीवनी-लेखक को यह भी देखना पड़ता है कि किन-किन प्रभावों ने उसके चरित-नायक के व्यक्तित्व का निर्माण किया। आत्मकथा में किसी व्यक्ति को अपनी मनोवृत्तियों के साथ अपने विगत जीवन का उद्घाटन रहता है। उसमें उसके जीवन और परिवेश से सम्बद्ध व्यक्तियों, घटनाओं, निजी अनुभव का उल्लेख भी रहता है तथा वह अपने संदर्भ में दूसरों को समझने की कोशिश करता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र से संबंधित व्यक्ति आत्मकथा लिख सकता है।

'जीवनी' शब्द जीवन से बना है, उ… किसी व्यक्ति के जीवनवृत्त का वर्णन होता है। अ…

JULY 29
FRIDAY

शब्द 'Biography' की यही अर्थ देता है — Bio जीवन graphy वर्णन। किसी व्यक्ति के चरित्र की कुछ विशेषताएँ है जो पाठक के लिए प्रेरणादायी बन सकती है। जीवनी में जीवन के प्रमुख घटनाओं के माध्यम से व्यक्ति के आंतरिक मानसिक विकास का चित्रण किया जाता है। जीवनी में बाह्य और आन्तरिक मानसिक विकास का चित्रण किया जाता है।

जीवनी की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं: —

(क) आदर्श चरित्र — जीवनी उस व्यक्ति के लिए लिखी जाती है जिसमें चारित्रिक विशेषताएँ हों और लोग उस व्यक्ति के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर सकें। इस दृष्टि से आम तौर पर इतिहास में प्रसिद्ध और अपने क्षेत्र में ख्याति-प्राप्त व्यक्तियों की ही जीवनी लिखी जाती है।

आधुनिक युग में इस नजरिए में कुछ परिवर्तन आया है। अब साहित्य में आम आदमी द्वारा आम आदमी पर

लिए लिखने पर बल मिला है। नए युग में उन लोगों की जीवनी भी लिखी जाती है, जो ख्यातनामा नहीं हैं।

(2) प्रामाणिकता :— जीवनी का उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब तथ्य और घटनाक्रम प्रामाणिक हों, अन्यथा वह कथा-साहित्य होगा, जिसमें आदर्श चरित्र या कथानायक की सृष्टि की जाती है। जीवनी कथा-साहित्य नहीं है, इसलिए जब तक वह प्रामाणिक न हो, लोग उसे प्रेरणास्पद नहीं मानेंगे।

(3) संवेदना का स्वर— जीवनी में नायक के प्रति (या नायिका) लेखक में आदर, श्रद्धा और गर्व का भाव होना चाहिए, जिससे वह आदर्श चरित्र की प्रमुख विशेषताओं को उजागर कर सके। संवेदना और आदर्श चरित्र के साथ संबंधों के आधार पर कई तरह की जीवनियाँ होती हैं वे हैं :— आत्मीय जीवन, लोकप्रिय जीव[नी] कलात्मक जीवनी और मनोवैज्ञानिक जीव[नी]

(4) वर्णन की तटस्थता — लेखक आदर्श चरि[त्र]

के कितने ही निकट क्यों न हों, कितने ही श्रद्धालु क्यों न हों, उनका चित्रण तटस्थ और निष्पक्ष होना चाहिए। उन्हें अपनी तरफ से कुछ छिपाना या बढ़ाना नहीं चाहिए, उन्हें अपनी ओर से संदेश देना या निष्कर्ष निकालना नहीं चाहिए।

(5) मार्मिक शैली — वर्णन की तटस्थता के बावजूद चित्रण सपाट न हो और न ही वर्णन उबाऊ हो। जीवन्त चित्रण और आकर्षण शैली साहित्यि जीवनियों का परम गुण है।

जीवनी - लेखन के उस दौर में मुकुन्दीलाल वर्मा, क्षितिनाथ पांडे आदि ने अच्छा कार्य किया है निराला पर डा० रामविलास शर्मा और प्रेमचन्द पर अमृत राय की लिखी जीवनियाँ साहित्य-संसार में सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है। विष्णु प्रभाकर द्वारा शरतचन्द्र चटर्जी पर लिखी 'आवारा मसीहा' तो कृति ~~स्तम्भ~~ स्तम्भ मानी जाती है।